भजन

तर्ज–अब तो है तुमसे हर खुशी अपनी

मौज है ये धनी आपकी अपनी
आप रखते हो मेहर मे अपनी

1–अपने धनी जी तो है, मेहरों के सागर
मेहर है उनकी , अव्वल आखर
निमख न काढ़ी, नजर से अपनी

2–इश्क और इलम, हक की मेहर से आया
है मोमिनों पर, मेहर की छाया
अर्श दिल मे भरी, रोशनी अपनी

3–सनकूल नजरे ,मेहर भरी है
आपके बल से , रूह ये खड़ी है
आपकी ये ही, साहेबी अपनी